सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल

९वीं एवेन्यू, आई.पी.एक्सटेंशन, पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र: 2026-27

कक्षा: 6	विषय: पाठ्यपुस्तक	पाठ:3श्री मुफ़्तानंद से मिलिए

बोलकर

(क) श्री मुफ्तानंद का व्यवहार ऐसा था कि वे हर चीज फ्री में चाहते थे। जैसा उनका नाम था वैसा ही उनका गुण था।

(ख) श्री मुफ्तानंद जी के जीवन में मुफ्त चीजों का बहुत महत्व है। उन्हें लगता है कि जो स्वाद मुफ़्त का खाने में आता है यह पैसा खर्च करने पर नहीं आता।

(ग) श्री मुफ्तानंद दूसरे की किताबें ले जाते हैं फिर उसे वापस करने का नाम नहीं लेते। उन्होंने इस प्रकार से अनेक पुस्तकें अपनी अलमारी में बंद करके रखी हुई हैं जिन्हें वह लौटाने का वादा करके ले गये थे।

(घ) श्री मुफ़्तानंद जी ने भारत की जनसंख्या बढ़ाने में सहयोग इस प्रकार दिया है कि उनकी चार लड़कियाँ और छह लड़के हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर- (लिखकर)

(क) लेखक ने गुफ़्तखोरी की प्रवृत्ति की आलोचना गुफ्तानंद के माध्यम से की है। मुफ्तखोरी की अनुचित आदत के कारण लोग अपना आत्म-सम्मान, परिश्रम और आत्मनिर्भरता को भी दाँव पर लगा देते हैं।

(ख) वच्चों को स्कूल की फीस न देनी पड़े, इसके लिए वह हमेशा फ़ीस माफ़ करने के चक्कर में स्कूलों के मैनेजर और प्रिंसिपलों के घर पर धरना देते रहते हैं।

(ग) श्री मुफ्तानंद की डॉक्टर, वैद्‌य, हकीम सभी से मित्रता होने के कारण मुफ़्त में दवाई हासिल कर लेते थे।

(घ) इस पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें मुफ्तखोरी की आदत नहीं डालनी चाहिए। हमें दूसरों के धन पर ऐश नहीं करना चाहिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर-

(क) हाँ, मुफ्तानंद जैसे लोग समाज में समस्याएँ पैदा करते हैं क्योंकि उनकी वज़ह से बाई बार अन्य लोगों को दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। ऐसे लोग मुफ़्त के चक्कर में दूसरों को मुसीबत में डाल देते हैं और गरीब लोगों के हक को छीन कर अपना लाभ उठाते हैं।

(ख) यदि हम लेखक की जगह होते तो मुफ्तानंद को यह सलाह देते कि आप अपने आप में आर्थिक रूप से सक्षम है, इसलिए मुफ़्त के सामान से दूर रहिए।

पठित गद्यांश- (केवल किताब में भरिए)

(क) नगर में बर्फ का कारखाना खुला था और उस कारखाने के मालिक ने दो दिन तक मुफ़्त में बर्फ बाँटने का ऐलान करवा दिया था। अतः मुफ़्तानंद जी मुफ़्त में बर्फ़ लेने गए थे।

(ख) बर्फ़ लेने के चक्कर में उनकी जूती खो गई तथा कमीज फट गई।

(ग) लेखक ने मुफ़्तानंद जी को 'मुफ़्तखोरों के बादशाह' के नाम से इसलिए संबोधित किया है क्योंकि वह एक बर्फ के टुकड़े के लिए घंटों समय नष्ट करके लाइन में लगकर अपनी कमीज़ फरवा कर मुफ़्त में बर्फ का टुकडा लेकर आए थे।

(घ) मुफ़्तानंद जी ने अपने नुकसान के बारे में यह सोचा कि मुफ़्त में मिली बर्फ के आगे यह नुकसान मामूली है।

(ङ) लेखक ने मुफ़्तानंद जी को उस्ताद इसलिए कहा है क्योंकि डॉक्टर तो दुनिया की नब्ज टटोलते हैं पर मुफ़्तानंद जी डॉक्टरों की। वे डॉक्टर तक से फ्री में दवाई ले आते हैं।